गुरु नानक - सबद ७२
तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २५

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥
न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥
जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥ रहाउ ॥
तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥
जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥
तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥
तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥२॥
जेता देहि तेता हउ खाउ ॥
बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥
नानकु एक कहै अरदासि ॥
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥
आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनुो ॥
आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानुो ॥
जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानुो ॥४॥३१॥

सार: पीड़ा मानव अनुभव का एक अभिन्न भाग है जो सभी व्यक्तियों को प्रभावित करती है। यह जीवन की क्षणभंगुरता, अधूरी इच्छाओं और अस्तित्व की वास्तविकता से उत्पन्न होती है। यह सामूहिक संघर्ष में हमें एक करती है, यह दर्शाते हुए कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ती हैं जो हमारे हृदय में विनम्रता और सहानुभूति का विकास करती हैं । कठिन समय में वह भ्रम टूटने लगते हैं जिनसे हम बंधे रहते हैं और इसी प्रक्रिया में हमें ऐसे गहन अनुभव प्राप्त होते हैं जो हमें सच्ची मुक्ति की ओर ले जाते हैं। विपत्ति के समय में ही हम अक्सर किसी महान शक्ति की उपस्थिति का अनुभव करते हैं जो हमें यह याद दिलाती है कि हम अकेले, अलग-थलग प्राणी नहीं हैं बल्कि एक विशाल, आपस में जुड़े हुए लयबद्ध अस्तित्व का हिस्सा

हैं। इन्हीं चुनौतीपूर्ण अनुभवों के माध्यम से हम गहन सत्यों और जीवन की गहराइयों के प्रति जागृत हो सकते हैं।

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा एक बुद्धिमान और दूरदर्शी नदी की तरह है। मैं एक मछली के समान हूँ, इसकी गहराई तक कैसे पहुँच सकता हूँ? यह इस बात को रेखांकित करता है कि जिस तरह एक मछली सागर की विशालता को नहीं समझ सकती जिसमें वह रहती है, वह जिसका हिस्सा है उसी तरह सृष्टि में रहने वाले मनुष्यों में भी इसकी विराट स्वरूप की सीमा को समझने की क्षमता सीमित है।

जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥
जहाँ-जहाँ मैं देखता हूँ, वहाँ-वहाँ आपकी ही उपस्थिति दिखाई देती है अगर मैं आपसे अलग हो जाऊँ तब दुख और विनाश निश्चित है। यह स्मरण कराता है कि हम सभी एक ही पारिस्थितिक तंत्र का हिस्सा हैं, इस सत्य से मुँह मोड़ने से आध्यात्मिक पतन हो सकता है। (१)

न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥
मैं चारे या मछुआरे के जाल से परिचित नहीं हूँ। यह दर्शाता है कि जब तक चेतना जागृत नहीं होती तब तक हम माया और भ्रम के जाल में फँसने का खतरा उठाते रहते हैं।

जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥ रहाउ ॥
जब पीड़ा मिलती है जीवन में तभी उस सर्वव्यापक शक्ति का स्मरण किया जाता है। यह दर्शाता है कि विपत्ति और कष्ट के समय ही व्यक्ति का चेतना का विस्तार होता है और वह जीवन की व्यापकता को पहचानता है। (१)(विराम)

तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥
सार्वभौमिक जागरूकता सर्वव्यापी है फिर भी इसे दूर समझा जाता है। यह द्वैत के उस भ्रम की ओर संकेत करता है जो अज्ञानता से उत्पन्न होती है।

जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥
मैं जो कुछ भी करता हूँ उस में सर्वव्यापी ऊर्जा की हाज़िरी रहती है। यह दर्शाता है कि हमारे चुनाव चाहे वह गुप्त हों या प्रकट, एक व्यापक ब्रह्मांडीय जागरूकता का हिस्सा हैं।

तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥
सर्वव्यापी जागरूकता सब देखती है लेकिन मेरा अहंकार इसे स्वीकार करने से इनकार करता है। यह उस अवस्था को दर्शाता है जब मनुष्य अपने कार्यों के लिए जवाबदेही स्वीकार करने से इंकार करता है जबकि विवेक वास्तविकता को पहचानता है।

तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥२॥
मैं सर्वव्यापी प्रकृति के नियमों को समझता नहीं हूँ, न ही उन पर चिंतन करता हूँ। (२)

जेता देहि तेता हउ खाउ ॥
जो कुछ भी मिला है मैं उसका उपभोग करता हूँ, यह जानते हुए कि अपने अस्तित्व के लिए हम हवा और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं जो स्व-निर्मित नहीं हैं बल्कि प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए हैं।

बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥
कोई दूसरा द्वार नहीं है तो मैं किस द्वार पर जाऊँ? यह दर्शाता है कि एक ही चेतना समस्त अस्तित्व को एकीकृत करती है इसीलिए हमारे भीतर निवास करने वाली यही ऊर्जा ही हमारी एकमात्र मार्गदर्शक है।

नानकु एक कहै अरदासि ॥
नानक कहते हैं कि मेरी प्रार्थना केवल एकत्व की है।

जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥
यह सांस, यह शरीर, यह संपूर्ण अस्तित्व आपके भीतर विद्यमान है। (३)

आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनुो ॥

आप स्वयं ही निकट हैं, स्वयं ही दूर हैं और स्वयं ही बीच में भी हैं। यह हमारी मानसिक और आत्मिक स्थिति को दर्शाता है जो यह निर्धारित करती है कि हम वास्तव में जुड़े हुए हैं अलगाव महसूस कर रहे हैं या अपने वास्तविक स्वरूप के एकत्व की खोज में हैं।

आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानुो ॥

आप अपनी दुनिया को प्रकृति के रूप में अनुभव करते हैं, समझते हैं और अभिव्यक्त करते हैं। यह दर्शाता है कि जीवन का प्रत्येक पहलू एक एकीकृत शक्ति का सार एवं प्रकट रूप है।

जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानुो ॥४॥३१॥

नानक कहते हैं कि प्रकृति के नियमों द्वारा जो कुछ भी लाभदायक माना जाता है वह स्वीकार्य और उचित है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि जो भी प्रकृति के स्वाभाविक प्रवाह के अनुरूप संरेखित है, वही वास्तव में संतुलन और सामंजस्य से प्रवाहित होता है। (४)(३१)

तत्त्व: गुरु नानक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हमारी वास्तविकता इस बात से निर्मित होती है कि हम अपने आस-पास की दुनिया को कैसे देखते और समझते हैं। जो स्थायी है वह वही है जो प्रकृति के नियमों के साथ सामंजस्य बिठाता है। इन नियमों का विरोध संघर्ष को आमंत्रित करता है जबकि इनके साथ तालमेल बिठाने से शांति और सहजता मिलती है। सामंजस्य कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम जीवन पर थोप सकते हैं, बल्कि यह वह है जिसे हम अस्तित्व की लय के भीतर खोजते हैं। वास्तव में यह समझने के लिए कि क्या लाभदायक है, हमें प्रकृति के उस क्रम पर विचार करना चाहिए जो उन सभी चीज़ों का आधार बनता है जो जीवन को धारण करती हैं, पोषित करती हैं और समृद्ध बनाती हैं। हालाँकि मानवीय नियम समय के साथ बदल सकते हैं लेकिन प्रकृति के नियम स्थिर और अपरिवर्तनीय हैं। अच्छी तरह जीने का अर्थ है कि इस प्राकृतिक क्रम को पहचान कर उसके साथ चलें। अच्छा जीवन वही है जिसमें जब हम ऐसा करते हैं, तो जीवन संघर्ष नहीं रहता बल्कि स्वयं अपनी स्वाभाविक गति में सहजता से प्रकट होने लगता है।

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com